नादान दोस्त

प्रेमचंद

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंड़े दिए थे । केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते-जाते देखा करते । सवेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते । उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मजा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी । दोनों के दिल में तरह-तरह के सवाल उठते । अंडे कितने बड़े होंगे ? किस रंग के होंगे ? कितने होंगे ? क्या खाते होंगे ? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे ? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे ? घोंसला कैसा है ? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं । न अम्माँ को घर के काम-धंधों से फुरसत थी, न बाबू जी को पढ़ने-लिखने से । दोनों बच्चे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे ।

श्यामा कहती-क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर्र-से उड़ जाएँगे ?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता-नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे । बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे ?

श्यामा-बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी ?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था ।

इस तरह तीन-चार दिन गुजर गए । दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-दिन बढ़ती जाती थी । अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे । उन्होंने अनुमान लगाया कि अब जरूर बच्चे निकल आए होंगे । बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ ।

चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ पाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे ! गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे ।

इस मुसीबत का अंदाजा करके दोनों घबरा उठे । दोनों ने फैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए । श्यामा खुश होकर बोली–तब तो चिड़ियों को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न ?

केशव–नहीं, तब क्यों जाएँगी ?

श्यामा–क्यों भइया, बच्चों को धूप न लगती होगी ?

केशव का ध्यान इस तकलीफ की तरफ न गया था । बोला–जरूर तकलीफ हो रही होगी । बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे । ऊपर छाया भी तो कोई नहीं ।

आखिर यही फैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए । पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया ।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे । श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई । केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से जमीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ करके उसमें पानी भरा ।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए ? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे ?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा । आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी । श्यामा से बोला–जाकर कूड़ा फेंकनेवाली टोकरी उठा लाओ । अम्माँ जी को मत दिखाना ।

श्यामा–वह तो बीच से फटी हुई है । उसमें से धूप न जाएगी ?

केशव ने झुँझलाकर कहा–तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा ।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई । केशव ने उसके सूराख में थोड़ा-सा कागज ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला–देख, ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा । तब कैसे धूप जाएगी ?

श्यामा ने दिल में सोचा, भइया कितने चालाक हैं !

२

गरमी के दिन थे । बाबू जी दफ्तर गए हुए थे । अम्माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं । लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ ? अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके, आँखें बंद किए, मौके का इंतजार कर रहे थे । ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्माँ जी उच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाजे की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए । अंडों की हिफाजत की तैयारियाँ होने लगीं । केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा ।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी । स्टूल चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस तरफ ज्यादा दबाव पाता था, जरा-सा हिल जाता था । उस वक्त केशव को कितनी तकलीफ उठानी पड़ती थी, यह उसी का दिल जानता था । दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज से डाँटता—अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा । मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था । बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते ।

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं । केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं । जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है । श्यामा ने नीचे से पूछा-कै बच्चे हैं भइया ?

केशव – तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले ।

श्यामा– जरा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं ?

केशव– दिखा दूँगा, पहले जरा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ । बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं ।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई । केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए ।

श्यामा ने फिर कहा–हमको भी दिखा दो भइया ।

केशव – दिखा दूँगा, पहले जरा वह टोकरी तो दे दो, ऊपर छाया कर दूँ । श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली-अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ । केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा-जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा ।

श्यामा प्याली और चावल भी लाई । केशव ने टोकरी के नीचे तीनों चीजें रख दीं और आहिस्ते से उतर आया ।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा–अब हमको भी चढ़ा दो भइया ।

केशव– तू गिर पड़ेगी ।

श्यामा– न गिरूँगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना ।

केशव– न भइया, कहीं तू गिर -गिरा पड़ी तो अम्माँ जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी । कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था । क्या करेगी देखकर ? अब अंडे बड़े आराम से हैं । जब बच्चे निकलेंगे, तो उनको पालेंगे ।

दोनों चिड़ियाँ बार-बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं । केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठतीं । स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी ।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा–तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्माँ जी से कह दूँगी ।

केशव – अम्माँ जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ ।

श्यामा– तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं ?

केशव– और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते !

श्यामा – हो जाते, हो जाते । देख लेना, मैं कह दूँगी !

इतने में कोठरी का दरवाजा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा–तुम दोनों बाहर कब निकल आए ? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना ? किसने किवाड़ खोला ?

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा ने माँ से यह बात नहीं कही । उसे डर लगा कि भइया पिट जाएँगे । केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे । अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था । श्यामा सिर्फ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फैसला नहीं किया जा सकता । शायद दोनों ही बातें थीं ।

माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगी । अभी सिर्फ दो बजे थे । बाहर तेज लू चल रही थी । अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी ।

३

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली । किवाड़ खुले हुए थे । वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आई और ऊपर की तरफ ताकने लगी । टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नजर नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर जोर से बोली–भइया, अंड़े तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए ।

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंड़े नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज बाहर निकल आई है । पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है ।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया । सहमी हुई आँखों से जमीन की तरफ देखने लगा । श्यामा ने पूछा - बच्चे कहाँ उड़ गए भइया ?

केशव ने करुण स्वर में कहा– अंड़े तो फूट गए ।

श्यामा – और बच्चे कहाँ गए ?

केशव– तेरे सर में । देखती नहीं है अंडों में से उजला-उजला पानी निकल आया है । वही तो दो-चार दिनों में बच्चे बन जाते ।

माँ ने सोंटी हाथ में लिए हुए पूछा– तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो ?

श्यामा ने कहा– अम्माँ जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं ।

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोलीं–तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा ।

अब तो श्यामा को भइया पर जरा भी तरस न आया । उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े । इसकी उसे सजा मिलनी चाहिए । बोली–इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्माँ जी ।

माँ ने केशव से पूछा–क्यों रे ?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा ।

माँ–तू वहाँ पहुँचा कैसे ?

श्यामा – चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े अम्माँ जी ।

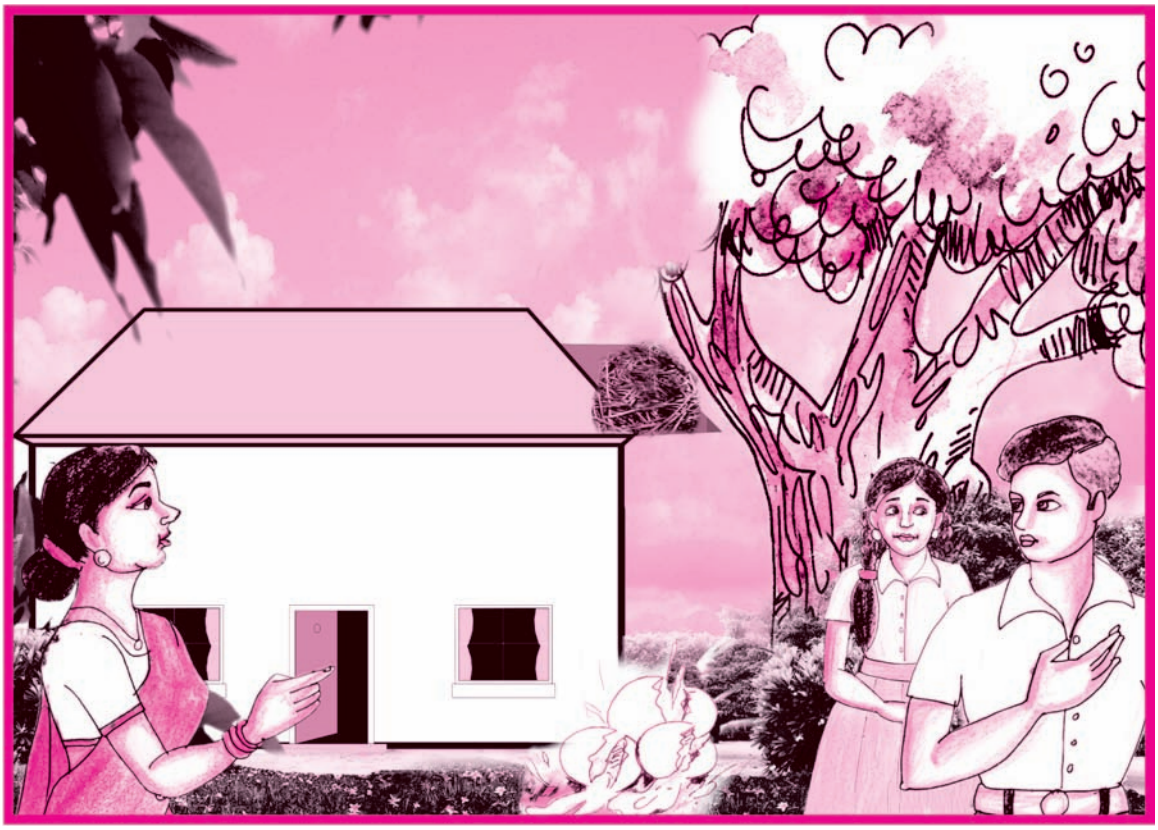

केशव – तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी ?

श्यामा - तुम्हीं ने तो कहा था ।

माँ– तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं । चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती ।

श्यामा ने डरते-डरते पूछा–तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं अम्माँ जी ?

माँ–और क्या करती ! केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा । हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने !

केशव रोनी सुरत बनाकर बोला– मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रख दिया था अम्माँ जी !

माँ को हँसी आ गई । मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफसोस होता रहा । अंडों की हिफाजत करने के जोश में उसने उनका सत्यानाश कर डाला । इसे याद कर वह कभी-कभी रो पड़ता था ।

दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं ।

शब्द-अर्थ

घोंसला - घास-फूस से बना हुआ पक्षी का घर
तसल्ली - ढाढ़स
मुसीबत - कष्ट, विपत्ति
तकलीफ- दु:ख, पीड़ा
हिकमत- युक्ति, तरकीब
टोकरी- बाँस या पतली टहनियों का बना हुआ गोल और गहरा बरतन, डला
आवाज- शब्द
कसूर - दोष
घबराकर- भयभीत होकर
अफसोस - दु:ख, पश्चात्ताप
फुरसत- अवकाश, छूट्टी
जिज्ञासा- जानने की इच्छा
अंदाजा- अनुमान
फैसला - निर्णय
सूराख- छेद
टहनी- छोटी डाली
मुहब्बत- प्रेम
हिस्सेदार - सह-भागी
सहमी हुई - काफी डरी हुई
हिफाजत - रक्षा, बचाव

अभ्यास

बोध और विचार :

मौखिक :

१. प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा, आप इसे क्या शीर्षक देना चाहेंगे ?

२. केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में क्या क्या अनुमान लगाए ? यदि उस जगह आप होते तो क्या अनुमान लगाते और क्या करते ?

३. माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए ?

४. माँ के पूछने पर केशव और श्यामा दोनों में से किसी ने किवाड़ खोलकर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया ?

५. प्रेमचंद की कहानी 'सत्याग्रह' से नीचे एक अंश दिया गया है । आप इसे पढ़िए और उचित स्थान पर विराम चिह्न लगाओ -

उसी समय एक खोमचेवाला जाते दिखाई दिया दो बज चुके थे चारों तरफ सन्नाटा छा गया था पंडित जी ने बुलाया खोमचेवाले खोमचेवाला कहिए क्या दूँ भूख लग आई न अन्न–जल छोड़ना साधुओं

का काम है हमारा आपका नहीं मोटे राम अबे क्या कहता है यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि जरा अपनी कुप्पी मुझे दे देखूँ तो वहाँ क्या रेंग रहा है मुझे भय होता है

लिखित :

१. अंडों के बारे में केशव और श्यामा के मन में किस तरह के सवाल उठते थे ?

२. केशव और श्यामा आपस में सवाल-जबाव करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दे दिया करते थे ?

३. चिड़िया के बच्चों को धूप से बचाने का उपाय किसने सोचा और उसे कैसे पूरा किया ?

४. केशव और श्यामा ने चिड़िया के अंडों की रक्षा की या नादानी ?

५. केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना-पानी मँगाकर कार्निस पर क्यों रखे थे ?

भाषा-बोध :

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जानेवाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं ।

सर्वनाम के छह भेद हैं ।

- पुरुषवाचक सर्वनाम - मैं, हम, तू, तुम, वह, उसे
- निजवाचक सर्वनाम - स्वयं, खुद, अपने-आप
- निश्चयवाचक सर्वनाम - यह, वह
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम - कुछ, कोई, किसी
- संबंधवाचक सर्वनाम - जैसा-वैसा, जो-वह, जिसे-उसे
- प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, किसने, किसे, किससे, किनकी ।

आओ, हम पुरुषवाचक सर्वनाम का अभ्यास करेंगे।

बोलनेवाले , सुनने वाले तथा बातचीत में किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

- बोलनेवाला या लिखनेवाला अपने लिए प्रयोग करता है –

  मैं , मेरा, हम, हमारा, हमें ।

  इन्हें उत्तम पुरुष कहते हैं ।
- सुनने वाले या पढ़ने वाले के लिए प्रयोग किया जाता है–

  तू, तुम, तुम्हारा, तेरा, आप, आपका

  इन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं ।

- बातचीत में किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है-

  वह, वे, यह, ये, उस, उन्हें, उनको ।

  इन्हें अन्य पुरुष कहते हैं ।

नीचे दिए गएअनुच्छेद में तीनों प्रकार के पुरुषवाचक सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करो :

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा । आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी । श्यामा से बोला– तू जाकर कूडा फेंकने वाली टोकरी उठा ला । अम्माजी को मत दिखाना । वरना वह मारेंगी । श्यामा–वह तो बीच से फटी हुई है । उसमें से धूप न जाएगी ? केशव ने झुँझलाकर कहा–तू टोकरी तो ला, मैं उसका सूराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा ।

अनुभव विस्तार :

१. इस पाठ को पढ़कर मालूम कीजिए कि दोनो चिड़ियाँ वहाँ फिर क्यों न दिखाई दीं ? वे कहाँ गई होंगी ? इसके बारे में अपने दोस्तों के साथ मिलकर बातचीत करो ।

२. इस कहानी में गर्मी के दिनों की चर्चा है । अगर सरदी या बरसात के दिन होते तो क्या-क्या होता ? अनुमान करो और अपने मित्रों से कहो ।

३. इस तरह की एक कहानी लिखने की कोशिश करो ।